अध्याय-II

वर्ष - एक नज़र

2003-04 में निष्पादन

- परिसज्जित इस्पात का कुल अनुमानित उत्पादन 361.50 लाख टन हुआ जो 2002-03 के दौरान 336.71 लाख टन के उत्पादन की तुलना में 7.4% अधिक है।
- कच्चे लोहे के कुल उत्पादन का अनुमान अनन्तिम रूप से 52.22 लाख टन लगाया गया जो 2002-03 के दौरान 52.85 लाख टन के उत्पादन की तुलना में -1.2% कम है।
- इस्पात के निर्यात का अनुमान अनन्तिम रूप से 53 लाख टन लगाया गया जो 2002-03 की तुलना में 17.6% अधिक है।
- अनन्तिम रूप से परिसज्जित इस्पात की कुल अनुमानित खपत 304 लाख टन थी। यह 2002-03 के दौरान प्रत्यक्ष खपत से 5.2% अधिक है।
- भारतीय इस्पात के लिए चीन एक महत्वपूर्ण निर्यात स्थल है।

योजना परिव्यय और बजटीय सहायता

1. इस्पात मंत्रालय के अधीन सरकारी क्षेत्र के उपक्रमों/संगठनों के प्रस्तावों के आधार पर योजना आयोग के साथ विचार-विमर्श हुआ और 10वीं योजना (2002-2007 के लिए अप्रोच पेपर में उल्लिखित योजना प्राथमिकताओं को ध्यान में रखते हुए इस्पात मंत्रालय के लिए 10वीं योजना हेतु 11044 करोड़ रुपए का परिव्यय अनुमोदित किया गया है। इसमें 65 करोड़ रुपए की बजटीय सहायता शामिल है।

2. 2003-2004 के बजट अनुमान में इस्पात मंत्रालय के लिए प्रक्षेपित वार्षिक योजना परिव्यय 11 करोड़ रुपए की बजटीय सहायता सहित 1461.30 करोड़ रुपए था और 2003-04 के संशोधित अनुमान में इसे 18 करोड़ रुपए की बजटीय सहायता सहित 854.66 करोड़ रुपए कर दिया गया है। वित्तीय वर्ष 2004-05 के लिए योजना परिव्यय 15 करोड़ रुपए की बजटीय सहायता सहित 1461.40 करोड़ रुपए प्रक्षेपित किया गया है।

3. वर्ष 2003-04 के बजट अनुमान और संशोधित अनुमान सहित वर्ष 2004-05 के बजट अनुमान के लिए इस्पात

मंत्रालय की मांग संख्या-88 में शामिल कुल वित्तीय आवश्यकताओं का सार निम्नलिखित तालिका में दिया गया है:-

(करोड़ रुपए)

मांग संख्या 88	बजट अनुमान 2003-2004			संशोधित अनुमान 2003-2004			बजट अनुमान 2004-2005		
	योजना	गैर-योजना	कुल	योजना	गैर-योजना	कुल	योजना	गैर-योजना	कुल
राजस्व खण्ड	0.00	68.31	68.31	0.00	103.87*	103.87	0.00	68.11	68.11
पूंजी खण्ड	11.00	2.00	13.00	18.00	2.00	20.00	15.00	2.00	17.00
योग	11.00	70.31	81.31	18.00	105.87	123.87	15.00	70.11	85.11

* इसमें 952.10 करोड़ रुपए शामिल नहीं है जो भारत सरकार के ऋणों को बट्टे खाते डालने तथा ब्याज और उस पर दण्ड स्वरूप ब्याज को माफ करने के कारण सेल/इस्को के संबंध में लेखा समायोजन है।

अनुसंधान और विकास

प्रौद्योगिकी, उत्पाद विकास, उत्पादकता में वृद्धि, ऊर्जा खपत में कमी, अपशिष्टों का उपयोग आदि की दृष्टि से देश में इस्पात संयंत्रों के प्रौद्योगिकीय उन्नयन में अनुसंधान और विकास महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। देश में लोहा और इस्पात क्षेत्र में अनुसंधान और विकास प्रयासों को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार ने इस्पात विकास निधि (एस डी एफ) से लगभग 150 करोड़ रुपए का व्यय मंजूर किया है।

इस्पात मंत्रालय ने अनुसंधान परियोजनाओं को मंजूरी देने के लिए सचिव (इस्पात) की अध्यक्षता में अधिकार प्राप्त समिति (ईसी) गठित की है। 1998 के बाद अधिकार-प्राप्त समिति 9 बैठकें कर चुकी है और 212.73 करोड़ रुपए की लागत की 31 अनुसंधान परियोजनाओं को मंजूर दी है। इसमें से 99.57 करोड़ रुपए एस डी एफ से प्राप्त किए जायेंगे। अनुसंधान और विकास कार्यों के लिए अनुसंधान प्रयोगशालाओं/संस्थाओं, इस्पात संयंत्रों आदि को एसडीएफ से अब तक लगभग 72.00 करोड़ रुपए संवितरित किए जा चुके हैं।

इस्पात मंत्रालय में सूचना प्रौद्योगिकी का विकास

ई-गर्वनेन्स प्रोग्राम के एक भाग के रूप में मंत्रालय का इन्टरनेट पोर्टल (ए टी टी पी//एन टी-स्टील) (htt://nt-steel) बनाया गया है। यह पोर्टल सामान्य प्रशासन से संबंधित शिकायतें, लेखन सामग्री मदों की मांग के लिए ई-सबमिशन, आकस्मिक तथा अर्जित छुट्टी के आवेदनों के लिए ई-फाइलिंग आदि को आन-लाइन लोड करने की सुविधा देता है। यह इस्पात के उत्पादन, इस्पात के निर्यात और आयात, प्रत्यक्ष खपत, मांग और उपलब्धता, बाजार-मूल्य तथा बाजार विश्लेषण के क्षेत्र में इस्पात संबंधी आंकड़े भी उपलब्ध कराता है।

केन्द्रीय मंत्रालयों/विभागों के लिए सूचना प्रौद्योगिकी विभाग, संचार और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के ई-रेडीनेस एसेस्मेंट ग्रुप द्वारा किए गए सर्वेक्षण के परिणामों में इस्पात मंत्रालय को 44 प्रतिस्पर्धी केन्द्रीय मंत्रालयों/विभागों में तीसरे स्थान पर रखा है।

इस्पात मंत्रालय में राजभाषा नीति का कार्यान्वयन

मंत्रालय, इसके संबद्ध कार्यालय और सरकारी क्षेत्र के उपक्रमों में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को काफी प्रोत्साहित किया गया है। इस्पात राजभाषा शील्ड (प्रथम पुरस्कार) इस्पात राजभाषा ट्राफी (द्वितीय पुरस्कार) तथा इस्पात राजभाषा ट्राफी (तृतीय पुरस्कार) देकर सरकारी क्षेत्र के उपक्रमों को प्रोत्साहित किया जाता है। इसके ''ग'' क्षेत्र में स्थित उपक्रमों को पृथक रूप से एक शील्ड प्रदान की जाती है। इस्पात उद्योग तथा इससे संबंधित विषयों पर हिन्दी में मूल पुस्तकों के लेखकों को प्रोत्साहित करने के लिए प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कारों के लिए क्रमशः 15,000/- रु., 10,000/- तथा 7,500/- रु. का नकद पुरस्कार दिया जाता है।

अपना सरकारी काम अधिक से अधिक हिन्दी में करने के लिए माननीय इस्पात राज्य मंत्री ने 14 सितम्बर, 2003 को मंत्रालय और सरकारी क्षेत्र के उपक्रमों के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए एक अपील जारी की। राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय) द्वारा जारी अनुदेशों के अनुसार 1.9.2003 से 15.9.2003 तक मंत्रालय में हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया गया।

मंत्रालय में चार वर्ष पूर्व आरम्भ की गई "प्रतिदिन एक शब्द योजना'' चल रही है। इस योजना के अन्तर्गत हिंदी के एक शब्द/वाक्यांश और उसका अंग्रेजी समतुल्य प्रतिदिन उद्योग भवन में मंत्रालय में लगे तीनों तलों के ब्लैक बोर्डों पर लिखा जाता है। ये शब्द/वाक्यांश सामान्यतया प्रशासनिक और तकनीकी स्वरूप के होते हैं जो दिन-प्रतिदिन सरकारी कामकाज में उपयोग में आते हैं।

मंत्रालय में हिंदी में कार्य करने के लिए बुधवार को ''हिंदी दिवस'' के रूप में निर्धारित किया गया है। इस दिन सभी अधिकारियों और कर्मचारियों से अपना सरकारी कामकाज हिंदी में करने की अपेक्षा की जाती है।

स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड (सेल)

वर्ष 2003-04 के दौरान सेल में विक्रेय इस्पात का उत्पादन 105.8 लाख टन के लक्ष्य की तुलना में 110.2 लाख टन हुआ जो पिछले वर्ष हुए 103.5 लाख टन विक्रेय इस्पात के उत्पादन से 6.5% अधिक था।

2003-04 में सेल की सहायक कंपनी, इस्को में विक्रेय इस्पात का उत्पादन 25.7 लाख टन हुआ जो लक्ष्य का 73% था। 2002-2003 में 2.64 लाख टन उत्पादन हुआ जबकि पिछले वर्ष 3.02 लाख टन उत्पादन हुआ था।

31.3.2004 को समाप्त अवधि के दौरान सेल को 2628 करोड़ रुपए का निवल लाभ हुआ। 2003-04 के दौरान सेल ने 24178 करोड़ रुपए का कारोबार किया जबकि पिछले वर्ष 19207 करोड़ रुपए का कारोबार हुआ था। 2003-04 के

स्मृति उद्यान, बीएसपी, सेल

दौरान 2512 करोड़ रुपए का कर पश्चात निवल लाभ हुआ जबकि 2002-2003 के दौरान 304 करोड़ रुपए की कर-पश्चात् निवल हानि हुई थी।

राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड (विशाखापट्टनम इस्पात संयंत्र)

वर्ष 2002-2003 और 2003-2004 का उत्पादन नीचे दिया गया है :

(इकाई : दस लाख टन)

मद	2002-03			2003-04			
	समझौता ज्ञापन लक्ष्य	वास्तविक	क्षमता उपयोगिता %	समझौता ज्ञापन लक्ष्य	वास्तविक	पूर्ति%	क्षमता उपयोगिता%
तप्त धातु	3.400	3.942	116	3.850	4.055	105	119
द्रव इस्पात	3.000	3.357	112	3.235	3.508	108	117
विक्रेय इस्पात	2.675	3.056	115	2.900	3.169	109	119

वर्ष 2003-2004 के दौरान वर्ष 2002-2003 की तुलना में तप्त धातु, द्रव इस्पात और विक्रेय इस्पात के उत्पादन में क्रमशः 3%, 5% और 4% की वृद्धि हुई।

अधिकांश प्रौद्योगिक-आर्थिक प्राचलों के संबंध में वी एस में ने भारतीय इस्पात उद्योग में बेन्चमार्क निर्धारित किया है। कुछ प्राचलों का निष्पादन नीचे दिया गया है :-

प्रौद्योगिक-आर्थिक प्रायल	यूनिट	डीपीआर मानदण्ड	01-02	02-03	03-04
कोक दर	कि.ग्राम/टीएचएम	625	524	517	522
बीएफ उत्पादकता (कार्य मात्रा)	टी/यन मीटर/दिन	1.75	1.86	1.98	2.03
विशेष रिफ्रैक्ट्री की खपत	कि.ग्राम/टीएलएस	34.26	10.5	9.71	9.25
विशिष्ट ऊर्जा की खपत	जी कैब/टीएसएस	7.78	6.62	6.13	6.07
श्रम उत्पादकता	टी/व्यक्ति/वर्ष	200	228	253	262

वर्ष 2003-2004 में आर आई एन एल ने 6174 करोड़ रुपए का बिक्री कारोबार किया जो 2002-2003 के बिक्री कारोबार की तुलना में 22% अधिक है। उचित विपणन नीति, स्टाकयार्ड प्रचालन को सुदृढ़ करने, ग्राहक-प्रबंधन के अच्छे संबंधों और शीघ्र निर्णय लेने से बिक्री में सुधार करने में सहायता मिली है। वर्ष के दौरान घरेलू बाजार में 5406 करोड़ रुपए की बिक्री हुई और 768 करोड़ रुपए का निर्यात किया गया।

अन्य पहलों जैसे ब्याज में कमी करने संबंधी उपायों, प्रौद्योगिक-आर्थिक प्रायलों में सुधार, लागत में कमी करने के उपायों आदि सहित उत्पादन और बिक्री में वृद्धि से वित्तीय निष्पादन में सुधार करने में सहायता मिली है। 2003-2004 के दौरान 2023 करोड़ रुपए का सकल मार्जिन और 1972 करोड़ रुपए का नकद लाभ हुआ। निवल लाभ जो 2002-2003 में 521 करोड़ रुपए था, बढ़कर 1521 (अनंतिम) करोड़ रुपए हो गया। यह 192% की वृद्धि है।

नेशनल मिनरल डेवलपमेंट कारपोरेशन लिमिटेड (एन एम डी सी)

वर्ष 2003-2004 के दौरान एन एम डी सी ने 183.3 लाख टन लौह अयस्क और 71159 कैरेट हीरे का उत्पादन किया। वर्ष 2002-2003 के लिए कम्पनी ने साम्या पूंजी पर 30% की दर से 39.65 करोड़ रुपए के लाभांश का भुगतान किया। कम्पनी द्वारा लाभांश भुगतान करने का यह लगातार तेरहवां वर्ष था।

कुद्रेमुख आयरन ओर कम्पनी लिमिटेड (के आई ओ सी एल)

क) वर्ष 2003-2004 के दौरान 36.71 लाख टन पैलेटों का उत्पादन करके कम्पनी ने पिछले वर्ष किए गए 34.50 लाख टन पैलेटों के उत्पादन से अधिक उत्पादन करके नया रिकार्ड बनाया है। यह लक्ष्य का 108% है और पिछले वर्ष की तुलना में 6% अधिक है।

ख) वर्ष 2003-2004 में कुल बिक्री पहली बार 1000 करोड़ रुपए, और पिछले वर्ष के दौरान 727.14 करोड़ रुपए की बिक्री से भी अधिक, अब तक की सबसे अधिक, 1024 करोड़ रुपए की बिक्री की। यह पिछले वर्ष की तुलना में 41% अधिक है और लक्ष्य का 157% है। वर्ष 2002-2003 के दौरान सकल मार्जिन/पी बी टी/पी ए टी क्रमशः 469.45% करोड़ रुपए, 406 करोड़ रुपए और 301 करोड़ रुपए रहा। ये वर्ष 2002-2003 की तुलना में काफी अधिक हैं।

ग) प्रौद्योगिक आर्थिक-प्राचल जैसे ऊर्जा खपत आदि में अच्छा सुधार हुआ है और समझौता ज्ञापन लक्ष्यों के अनुसार बहुत अच्छा है।

घ) वर्ष के दौरान 36.71 लाख टन पैलेटों (पैलेट चूरे सहित) का उत्पादन किया गया जो किसी भी वर्ष अब तक उत्पादित पैलेटों की सबसे अधिक मात्रा है। पिछले वर्ष 34.5 लाख टन पैलेटों का उत्पादन हुआ था।

ड) वर्ष के दौरान 36.28 लाख टन (पैलेट चूरे सहित) का प्रेषण किसी भी वर्ष में अब तक प्रेषित पैलेटों की सबसे अधिक मात्रा है। पिछले वर्ष का अधिकतम प्रेषण 35.39 लाख टन है।

मैंगनीज ओर (इण्डिया) लिमिटेड (मॉयल)

- 1.4.2003 से 31.3.2004 तक की अवधि के दौरान मॉयल ने 224.36 करोड़ रुपए का कारोबार किया और 39.72 करोड़ रुपए का कर-पूर्व लाभ अर्जित किया।

- 1.4.2003 से 31.3.2004 तक की अवधि के दौरान मॉयल ने 799.075 हजार टन मैंगनीज अयस्क का उत्पादन किया।

- 1.4.2003 से 31.3.2004 तक की अवधि के दौरान 975 टन इलैक्ट्रोलेटिक मैंगनीज डायाक्साइड (ईएमडी) और 10900 टन फैरो मैंगनीज का उत्पादन हुआ।

- 2002-2003 के दौरान मॉयल ने अब तक का सबसे अधिक 177.88 करोड़ रुपए का कारोबार किया। मॉयल ने वर्ष के दौरान 17.78 करोड़ रुपए का निवल लाभ अर्जित किया। वर्ष 2002-2003 के लिए मॉयल ने 27% लाभांश का भुगतान किया।

टाटा आयरन एण्ड स्टील कम्पनी लिमिटेड (टिस्को)

आधुनिकीकरण के अपने चार चरणों के पूरा करने के पश्चात टाटा स्टील ने पिछले सभी रिकार्ड तोड़ते हुए 2003-2004 में 35.4 लाख टन परिसज्जित इस्पात और 42.2 लाख टन अपरिष्कृत इस्पात का उत्पादन किया। लागत में कमी और सुधार के क्षेत्रों में अधिक मात्रा, अच्छे उत्पाद मिश्र और पर्याप्त सुधारों से टिस्को के निष्पादन को मार्क किया गया है।

विद्युत चाप भट्टी उद्योग

इस समय देश में विद्युत चाप भट्टी आधारित 35 इस्पात संयंत्र चल रहे हैं जिनकी कुल औसत वार्षिक क्षमता 67.2 लाख टन है। कई अन्य इकाइयां बन्द पड़ी हुई बताई गई हैं। विभिन्न कारण जैसे आदानों की बढ़ती लागत, बढ़ता टैरिफ, विद्युत की कमी, संसाधनों संबंधी समस्याएं आदि उद्योग के इस क्षेत्र के तुलनात्मक रूप से खराब निष्पादन के लिए उत्तरदायी माने जाते हैं। वर्ष 2003-2004 के दौरान ई ए एफ इकाइयों (जो अपना उत्पादन विकास आयुक्त, लोहा और इस्पात का कार्यालय, कोलकाता को सूचित करती थीं) द्वारा 57.0 लाख टन इंगट/कंकास्ट बिलेटों का उत्पादन किया गया जबकि 2002-2003 के दौरान 51.9 लाख टन उत्पादन हुआ था।

प्रेरण भट्टी उद्योग

अनुमान है कि 2003-2004 के दौरान चल रही 650 इकाइयों ने लगभग 49 लाख टन उत्पादन किया जबकि 2002-2003 में अनुमानित उत्पादन 47.5 लाख टन हुआ था। वर्तमान स्थिति का आंकन करने के लिए संयुक्त संयंत्र समिति ने प्रेरण भट्टी उद्योग का आल इंडिया बेस लाइन सर्वे किया है।

स्पंज लोहा उद्योग

भारत विश्व में स्पंज लोहे का सबसे बड़ा उत्पादक है। पिछले कुछ वर्षों के दौरान क्षमता और उत्पादन की दृष्टि से विशेष रूप से स्पंज लौह में अच्छी वृद्धि हुई। स्पंज लोहे की संस्थापित क्षमता जो 1990-91 में 15.2 लाख टन वार्षिक थी, 2002-2003 में बढ़कर 87.5 लाख टन हो गई। उत्पादन, 1990-91 के 9 लाख टन से बढ़कर 2003-04 में 80.0 लाख टन हो गया। इसके अतिरिक्त, देश में स्पंज लोहे की अनुमानित क्षमता 2003-2004 में बढ़कर लगभग 93 लाख टन वार्षिक हो गई।

कच्चा लोहा उद्योग

2003-2004 के दौरान देश में कच्चे लोहे का कुल उत्पादन 52.2 लाख टन हुआ जो पिछले वर्ष के 52.9 लाख टन के उत्पादन की तुलना में लगभग 1.3% कम है। देश में कच्चे लोहे के समग्र उत्पादन में लघु धमन भट्टी प्रक्रिया अपनाकर निजी/गौण क्षेत्र की इकाइयों का अंशदान, 2002-2003 के 79% से बढ़कर 2003-2004 में 81% हो गया। कम सल्फर और कम फास्फोरस की किस्मों सहित विशेष ग्रेड के कच्चे लोहे की उपलब्धता में भी इन इकाइयों ने काफी योगदान दिया है। कच्चे लोहे का आयात नगण्य है जबकि अनुमानित निर्यात 5.76 लाख टन है जो 2002-2003 के दौरान किए गए 6.29 लाख टन के निर्यात से मामूली कम है।